रेडी छात्रों के कृषकों का नवाचार

संकलन एंव संपादन

डॉ. बलवीर सिंह बधाला
सहायक प्रोफेसर व रेडी प्रभारी

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा
प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष

बी. एल. आसीवाल
सहायक प्रोफेसर

प्रसार शिक्षा विभाग

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय

(श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय)

जोबनेर-जयपुर (राज.)-303329

रेडी छात्रों के कृषकों का नवाचार

प्रेरणा
प्रो. जे.एस. सन्धू
कुलपति

मार्गदर्शन
डॉ. ए.के. गुप्ता
अधिष्ठाता

संकलन एंव संपादन

डॉ. बलवीर सिंह बधाला
सहायक प्रोफेसर व रेडी प्रभारी

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा
प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष

बी. एल. आसीवाल
सहायक प्रोफेसर

2021

प्रसार शिक्षा विभाग
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय
(श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय)
जोबनेर–जयपुर (राज.)–303329

राजस्थान सरकार
कृषि,पशुपालन एवं मत्स्य विभाग
6116, मंत्रालय भवन, शासन सचिवालय
जयपुर–302005 (राजस्थान)
दुरभाष : 2227125 (का.)

सत्यमेव जयते

लालचन्द कटारिया
मंत्री

<u>संदेश</u>

राजस्थान के विकास में कृषि क्षेत्र का सदैव विशेष योगदान रहा है। विगत वर्षों में कृषि विभाग एवं कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा कृषि अनुसंधान एवं नवाचार में किये गये प्रयासों के फलस्वरूप प्रदेश में कृषि उत्पादन में सतत् वृद्धि हुई है।

मुझे ज्ञात हुआ कि कोविड–19 की विषम परिस्थितियों में भी श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय के 207 कृषि स्नातक छात्रों द्वारा प्रगतिशील किसानों के यहां मशरूम खेती, मधुमक्खी पालन, पशुपालन, समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल, प्रौसेसिंग ईकाई, शेडनेड, ग्रीनहाउस, पालीहाउस, नर्सरी प्रबन्ध, पादप कीट–रोग, बीजोपचार, खरपतवार नियंत्रण, फल–सब्जी उत्पादन एंव फसल उत्पादन का प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त कर सराहनीय कार्य किया है। साथ ही मुझे प्रसन्नता है कि रेडी (रूरल इंटरप्रेन्योर अवेरनेस डवलपमेन्ट योजना) के जुड़े छात्रों ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में समीपवर्ती प्रगतिशील कृषकों की 'सफलता की कहानी' नामक साहित्य का संकलन किया है। इस कार्य के लिये छात्रों व प्रभारी डॉ. बी. एस. बधाला सहित इससे जुड़े अन्य वैज्ञानिकों को बधाई प्रेषित करता हूं।

आशा करता हूं कि यह संकलित साहित्य अन्य किसानों के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

लालचन्द कटारिया
लालचन्द कटारिया

कुलपति सचिवालय

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय

जोबनेर–303329 (जयपुर) राजस्थान–303329

✆ 01425–254555, ई–मेलः vc@sknau.ac.in

प्रो. जीत सिंह सन्धू

कुलपति

एक्स उप–महानिदेशक (फसल विज्ञान), भा.कृ.अनु.परिषद एवं
कृषि आयुक्त, भारत सरकार

संदेश

राजस्थान राज्य क्षेत्रफल में सबसे बड़ा राज्य होने के साथ–साथ भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 10.40 प्रतिशत हिस्सा रखता है। राजस्थान के किसानों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन रहा है। राजस्थान के कुल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 30 प्रतिशत भाग कृषि क्षेत्र से आता है। उन्नत कृषि तकनीकों का विकास, कृषि के ढांचागत विकास कार्यक्रम तथा किसानों की सजगता व सरकारी प्रोत्साहन से राजस्थान के कृषि उत्पादन में सतत् वृद्धि हुई हैं।

इस वर्ष श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर में श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय व श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि व्यवसाय प्रबन्ध महाविद्यालय के कुल 207 छात्रों को कृषकों के खेत की विभिन्न ईकाइयो विभिन्न कृषि उघोगों, प्लांट क्लिनिक में प्रायोगिक कार्य करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है।

स्टूडेन्ट रेडी के छात्रों द्वारा प्रगतिशील कृषकों के यहां मशरूम खेती, मधुमक्खी पालन, पशुपालन, समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल, विभिन्न प्रकार के बगीचे, मिल्क प्रौसेसिंग ईकाई, एलोवेरा प्रोसेसिंग ईकाई, शेडनेड, ग्रीनहाउस, पालीहाउस, नर्सरी प्रबन्ध, पंचगव्य, पादप कीटरोग, बीजोपचार, खरपतवार नियंत्रण, फल–सब्जी उत्पादन एवं फसल उत्पादन का प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त किया गया जिसकी मैं सराहना करता हूँ।

मुझे बेहद प्रसन्नता है कि प्रसार शिक्षा विभाग के वैज्ञानिकों ने कोविड–19 की विषम परिस्थितियों के बावजूद भी रेडी छात्रों के कृषकों की सफलता की कहानी इस पुस्तक में संकलित की है।

प्रसार शिक्षा विभाग के रेडी प्रभारी व सहायक प्रोफेसर डॉ. बलवीर सिंह बधाला व प्रोफेसर एंव विभागाध्यक्ष डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा तथा बी.एल. आसीवाल, सहायक प्रोफेसर ने कठिन मेहनत कर सहज एवं सरल हिन्दी भाषा में सफलता की कहानी का संकलन किया है जो कि बधाई के पात्र है। कृषकों के ये नवाचार राजस्थान के अन्य कृषकों हेतु भी लाभकारी सिद्ध होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(जीत सिंह सन्धू)

डॉ. ए. के. गुप्ता
अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर–जयपुर

संदेश

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान को देश में सबसे बड़े राज्य होने का गौरव हासिल है जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 342 लाख हैक्टेयर है। राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियां विषमताओं और विविधताओं से भरी पड़ी है, जहाँ एक और दक्षिणी–पूर्वी हिस्से में पूर्ण आर्द्र जलवायु पायी जाती है वही दूसरी ओर इसके उतर–पश्चिमी इलाकों में शुष्क जलवायु पायी जाती है। राजस्थान के कई हिस्सों में जहाँ एक और सर्दियों में तापमान शून्य डिग्री सेल्सीयस से नीचे चला जाता है वही गर्मी में तापमान पचास डिग्री सेल्सीयस तक पहुँच जाता है। विषम परिस्थितियों के बावजूद राजस्थान कृषि उत्पादन की दृष्टि से देश में अच्छा प्रदर्शन कर रहा है।

स्टुडेन्ट रेडी के छात्रों को प्रगतिशील एवं नवाचारी कृषकों को खेत पर नई तकनिकी सीखने का शुभ अवसर मिला। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत फसल उत्पादन फल उत्पादन, पादप रोग व कीटों के प्रभावी नियंत्रण, मृदा की जांच, पौषक तत्वों बीजोपचार, उर्वरक प्रबन्ध, खरपतवार नियंत्रण, जैविक खेती, समन्वित कृषि प्रणाली, कीटनाशक दवा स्प्रेयर आदि का प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त किया।

इस स्टूडेन्ट रेडी कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय के 111 छात्र–छात्राएं व श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि व्यवसाय प्रबन्ध के 96 विद्यार्थियों को इस महत्वपुर्ण कार्यक्रम से प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

स्टूडेन्ट रेडी के छात्र किसानों के खेत व कृषि के विज्ञान पर आखों से देखकर मुर्गीपालन, पशुपालन, समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल, विभिन्न बगीचे, मशरूम खेती, मिल्क प्रोसेसिग व पैकिग वर्मीकम्पोस्ट, अजोला, एलोवेरा प्रोसेसिग, नर्सरी प्रबन्ध, पंचगव्य के कौशल इत्यादि की प्रायोगिक जानकारी प्राप्त की।

मुझे बेहद प्रसन्नता है कि प्रसार शिक्षा विभाग के रेडी प्रभारी व सहायक प्रोफेसर डॉ. बलवीर सिंह बधाला, प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा तथा सहायक प्रोफेसर बी.एल. आसीवाल ने कठिन मेहनत कर सहज एवं सरल हिन्दी भाषा में सफलता की कहानी का संकलन किया है, जो प्रदेश के अन्य किसानों के लिये भी प्रेरणादायी होगा। मैं इस बुलेटिन के प्रकाशन के लिए प्रसार शिक्षा विभाग के डॉ. बलवीर सिह बधाला, डॉ. के. सी. शर्मा व बी.एल. आसीवाल, को हार्दिक बधाई व शुभकामनाए प्रेषित करता हूँ।

अधिष्ठाता
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर

कैलाश चन्द्र शर्मा
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

प्रसार शिक्षा विभाग
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय,
जोबनेर–जयपुर

संदेश

राजस्थान प्रदेश की गिनती देश के प्रमुख शुष्क क्षेत्रों में की जाती है। देश में उपलब्ध जल का केवल 1 प्रतिशत ही हमारे राज्य को उपलब्ध हो पाता है। ऐसी विषम परिस्थितियों के बावजूद भी यहां के कृषक खेती–किसानी एवं पशुपालन में नवाचार अपनाते हुए सफलता प्राप्त कर अपनी आय को दुगुनी करने में लगे है।

प्रस्तुत सम्पादन 'रेडी छात्रों के कृषकों के नवाचार' मुख्य रूप से विश्वविद्यालय के 207 रेडी छात्र–छात्राओं ने कृषकों के साथ रहकर प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करते हुए तैयार किया गया है।

इस प्रकाशन को समय पर तैयार करने में मेरे सहयोगी डॉ. बलवीर सिह बधाला, रेडी प्रभारी व सहायक प्राध्यापक, श्री बनवारी लाल आसीवाल, सहायक प्राध्यापक एवं दीक्षिता राठौर व वैशाली जैन, रेडी छात्रा ने कठिन परिश्रम किया है, ये सभी बधाई के पात्र है।

आशा है यह प्रकाशन राज्य के अन्य कृषकों एवं वैज्ञानिकों के ज्ञानवर्धन एवं उनकी आमदनी बढ़ाने में उपयोगी सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित।

कैलाश चन्द्र शर्मा

सुण्डाराम वर्मा
पदमश्री अवार्डी

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यनत प्रसन्नता हुई कि श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर के प्रसार शिक्षा विभाग के वैज्ञानिकों ने कृषकों के हितों का ध्यान रखते हुए रेडी छात्रों कें कृषकों की सफलता की कहानियां इस पुस्तक में संकलित की है।

इस पुस्तक में मेरे ध्यान में आया है, कि मधुमक्खी पालन, पशुपालन, मशरूम खेती, समन्वित कृषि प्रणाली, अजोला, एलोवेरा प्रोसेसिंग ईकाई, नर्सरी प्रबन्ध, पंचगव्य इत्यादि का प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

साथ ही नवाचारी किसानों की सफलता की कहानी इस पुस्तक में संकलित की है जो किसानों की आय में बढोतरी में कारगर साबित होगी है।

इस पुस्तक के कठिन प्रयास के लिए प्रसार शिक्षा विभाग के रेडी प्रभारी व सहायक प्रोफेसर डॉ. बलवीर सिंह बधाला व प्रोफेसर एंव विभागाध्यक्ष डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा तथा सहायक प्रोफेसर बी.एल. आसीवाल, ने कठिन मेहनत कर सहज एवं सरल हिन्दी भाषा में सफलता की कहानी का संकलन किया है जो कि बधाई के पात्र है। यह पुस्तक छात्रों एवं नवाचारी किसानों को प्रोत्साहित करने वाली एवं ये नवाचार राजस्थान के अन्य कृषकों हेतु भी लाभकारी सिद्ध होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

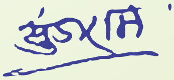

सुण्डाराम वर्मा

मोटाराम शर्मा
मशरूम किंग

जीवनधारा मशरूम प्रशिक्षण केन्द्र, सीकर

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यनत प्रसन्नता हुई है कि श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर के प्रसार शिक्षा विभाग के वैज्ञानिकों ने कृषकों के हितों का ध्यान रखते हुए रेडी छात्रों के कृषकों की सफलता की कहानियां इस पुस्तक में संकलित की है।

मुझे खुशी हुई कि कोविड–19 की विषम परिस्थितियों में भी श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय के 16 रेडी छात्रों को मेरे "जीवनधारा मशरूम प्रशिक्षण केन्द्र" पर 21 दिवसीय एग्रो इण्डस्ट्रीज कार्यक्रम के लिए चयन किया जिसका मुझे सोभाग्य मिला।

मुझे इस पुस्तक को देखने पर इसमें नर्सरी प्रबन्ध, ग्रीनहाउस, पालीहाउस, पशुपालन, मशरूम खेती, समन्वित कृषि प्रणाली, अजोला, एलोवेरा प्रोसेसिंग ईकाई इत्यादि का प्रशिक्षण प्राप्त नवाचारी किसानों की सफलता की कहानी इस पुस्तक में संकलित की है जो किसानों की आय में बढ़ोत्तरी में कारागार साबित होगी है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रसार शिक्षा विभाग के रेडी प्रभारी व सहायक प्रोफेसर डॉ. बलवीर सिंह बधाला व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा तथा सहायक प्रोफेसर बी.एल. आसीवाल ने कठिन मेहनत कर सहज एवं सरल हिन्दी भाषा में सफलता की कहानी का संकलन किया है जो कि बधाई के पात्र है। यह पुस्तक छात्रों एवं नवाचारी किसानों को प्रोत्साहित करने वाली तथा राजस्थान के अन्य कृषकों हेतु भी लाभकारी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित

मोटारामशर्मा
मोटाराम शर्मा

रेडी छात्रों के कृषकों का नवाचार

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	मुर्गी पालन कर कमाया दोगुना मुनाफा	01
2.	समन्वित खेती से किसान हुआ मालामाल	02
3.	पारंपरिक खेती अब नवाचार की ओर	03
4.	समन्वित खेती : दुगुनी आय का सर्वोत्तम उपाय	04
5.	समन्वित कृषि से किसान बना खुशहाल	06
6.	कृषि के साथ–साथ पशुपालन तथा सोलर सिस्टम बना लाभकारी व्यवसाय	08
7.	किसान खेमाराम ने अपने गांव को बना दिया मिनी इजरायल सालाना आय करीब एक करोड़ रूपये	09
8.	खेत तलाई से किसान की कायापलट	11
9.	पॉली हाउस में सब्जी उत्पादन कर मुनाफा कमाया	12
10.	समन्वित कृषि से किसान हुआ कुशल	13
11.	सब्जियों की बंपर पैदावार से किसान हुआ सम्मानित	14
12.	एकीकृत कृषि से महिला किसान बनी समृद्ध	15
13.	समन्वित कृषि से खुशहाल बना किसान	16
14.	समन्वित कृषि से किसान हुआ मालामाल	17
15.	एकीकृत खेती से किसान को लाभ	18
16.	जैविक खेती से सब्जी उत्पादन करके कमाया मुनाफा	19
17.	समन्वित कृषि से किसान की आमदनी में लगे चार चाँद	21
18.	एकीकृत खेती प्रणाली से किसान हुआ लाभान्वित	22
19.	जोबनेर के किसान का जैविक थाई एप्पल बेर में नवाचार	23
20.	प्याज भंडारण कर कमाया मुनाफा	24
21.	मिश्रित खेती से किसान बना समृद्ध	25
22.	समन्वित कृषि से हुए सफल डेहरा के महेन्द्र मण्डीवाल	26
23.	उद्यानिकी उत्पादन बना लाभकारी व्यवसाय	27
24.	युवा किसान ने मशरूम की खेती से पाई सफलता	28

मुर्गी पालन कर कमाया दोगुना मुनाफा

किसान का नाम : **श्री हनुमान सिंह राजपूत**

पता : **जयसिंहपुरा, तहसील-फुलेरा, जिला-जयपुर**

मोबाइल नंबर : **9079189008**

आवंटित रेडी छात्र का नाम : पिंकी मीणा

यह कहानी छोटे से गांव (जयसिंहपुरा) में रहने वाले किसान श्री हनुमान सिंह राजपूत की है। जिन्होंने कृषि विभाग की अनुदान सहायता से वर्षा जल को एकत्रित करने के लिए खेत तलाई का निर्माण किया। खेत तलाई का निर्माण प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अन्तर्गत वर्ष 2018–19 में हुआ। खेत तलाई का आकार 70 X 70 मीटर का है। स्वीकृत राशि 9.80 लाख रुपए है।

क्र.स.	फसल	क्षेत्र बीघा	उत्पादन (क्वि.)	कुल आय	कुल व्यय	शुद्ध आय
1	प्याज	2	150	65,000	25,000	40,000
2	गेहूं	4	25	55,000	4,500	50,500
3	जौ	2.5	20	30,000	3,500	26,500

इस जल का उपयोग जायद की सब्जियों एवं प्याज उत्पादन के लिए किया। प्याज के लिए उन्होंने घर पर बनी गोबर की खाद उपयोग में ली जिससे उत्पादन में बढ़ोतरी हुई।

मुर्गी पालन व्यवसाय : इनके पास कुल 4.0 हैक्टेयर कृषि योग्य जमीन है। उसी जमीन के एक हिस्से में 2016–17 में मुर्गीपालन व्यवसाय शुरू किया था। अभी कुल 13,000 मुर्गियां है जो प्रतिदिन अंडा उत्पादन देती है। 300 फिट क्षेत्र में मुर्गी पालन फार्म है। ये मुर्गियां प्रतिदिन 11,000–12,000 अंडे देती है। जो प्रतिदिन 40,000 रुपए उत्पादन देती है। इसके साथ ही 37,00 चूजे (मुर्गियों के बच्चे) है।

मुर्गीपालन से वर्तमान शुद्ध मासिक आय= रुपए 12,00,000

नस्ल	कुल मुर्गिया	अण्डा उत्पादन	प्रतिदिन अण्डा उत्पादन	मासिक आय
स्काई लार्क	13,000	11,000–12,000	40,000	12,00,000

इस प्रकार श्री हनुमान सिंह राजपूत ने कृषि के साथ–साथ मुर्गीपालन को भी एक अतिरिक्त आय का साधन बनाया। राजपूत कहते है कि तकनीकी मार्गदर्शन से मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार आया। ग्रामपंचायत जयसिंहपुरा में प्रोग्रेसिव फार्म में से पहला स्थान इनका ही है। जिससे इनको क्षेत्र में सामाजिक पहचान भी मिली।

हलधर टाइम्स

उड़ान पर हनुमान, आय एक लाख प्रतिमाह

समन्वित खेती से किसान हुआ मालामाल

कृषक का नाम : श्री कंवर सिंह यादव

पिता का नाम : श्री जगदीश जी यादव

पता : गांव-मोहनपुरा, तहसील-जालसू, जिला-जयपुर

मोबाईल नम्बर : 9799448460

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : सीमा यादव

यह आमेर तहसील के प्रगतिशील किसान कंवर सिंह की सफलता की कहानी है जिनके पास कृषि एवं पशुपालन के कार्य के लिए कुल 40 बीघा जमीन है। इन्होंने अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए छह–माह पूर्व 40 बीघा खेत में ड्रिप सिंचाई सिस्टम से फसलोत्पादन, सब्जीउत्पादन तथा डेयरी की नवीनतम तकनीकियों को अपनाकर समन्वित खेती से अच्छी आमदनी प्राप्त की।

समन्वित खेती में इनको अधिक आय सब्जी उत्पादन से होती है। साथ ही प्रतिदिन 50 से 60 लीटर तथा प्रतिमाह 1800 लीटर दूध उत्पादन होने से प्रतिमाह ₹60000–70000 आय होती है जिसमें पशुओं का प्रतिमाह रूपये 30000 का खर्च आता है तथा 30000–35000 प्रतिमाह इनको शुद्ध आय प्राप्त होती है। साथ ही किसान ने 6 बीघा टमाटर लगाकर 3.50 लाख की आय प्राप्त की। धीरे–धीरे उत्पादन में वृद्धि होने लगी आर्थिक स्थिति मजबूत होने लगी जिससे वह और खेती करने लगे और आर्थिक स्थिति में सुधार आने लगा इन्होंने अभी हाल ही में ₹100000 का प्याज उत्पादन किया है।

सारणी– कुल वार्षिक आमदनी का विवरण वर्ष 2019–20

क.सं.	विवरण	क्षेत्रफल व पशु संख्या	आमदनी ₹	कुल व्यय ₹	शुद्ध लाभ ₹
1.	सब्जी उत्पादन (टमाटर)	0.6 हैक्टयर	3.5 लाख	0.90 लाख	2.60 लाख
2.	फसल उत्पादन (प्याज)	0.2 हैक्टयर	1.0 लाख	0.30 लाख	0.70 लाख
3.	पशुपालन (दूध उत्पादन)	18 पशु	8.4 लाख	3.60 लाख	4.8 लाख
	कुल		**12.90 लाख**	**4.80 लाख**	**8.10 लाख**

इस प्रकार श्री कंवर सिंह यादव सब्जी उत्पादन, प्याज उत्पादन तथा पशु पालन करके समन्वित कृषि की बदौलत 8.10 लाख का शुद्ध मुनाफा कमा रहे है, साथ ही परिवार के सभी सदस्यों को रोजगार देने में सफल हो रहे है।

पारंपरिक खेती अब नवाचार की ओर

किसान का नाम : श्री सुरेन्द्र अवाना
पता : ग्राम पोस्ट-भैराणा, तहसील-फूलेरा, जिला-जयपुर
मोबाईल नम्बर : 9462229999
आवंटित रेडी छात्र का नाम : सुभाष कुमावत

खेती में नवाचार को अपनाने से प्राप्त सफलता की यह कहानी है बिचून ग्राम पंचायत के पास एक छोटे से गाव भैराना में रहने वाले एक किसान श्री सुरेन्द्र अवाना की, कैसे उन्होने अपने खेत से नवाचार को अपनाकर खुद को, और अपने परिवार को सम्पन्न बनाया।

हमारे देश में गाय को गौ माता का दर्जा दिया गया है। इसी भावना से प्रेरित होकर शिक्षा जगत से जुड़े सुरेन्द्र अवाना ने ग्राम पंचायत बिचून के भैराणा ग्राम से 12 सितम्बर 2016 को 2 गाय से गौपालन का कार्य शुरू किया था। वर्तमान में गीर देशी नस्ल की गायों की डेयरी संचालित कर गौ सेवा के कार्य से जुड़े हैं। **शिवम डेयरी** बिचून के नाम से संचालित डेयरी में 188 गाय व बछड़े हैं तथा गौशाला में जैविक खाद बनाने के प्लान्ट के साथ चिलिंग मशीन व दूध पैंकिग करने की व्यवस्था है। करीब 70 बीघा जमीन पर संचालित डेयरी में गायों के लिए 18 तरह का चारा की व्यवस्था है तथा गोबर व गौ मूत्र से जैविक खाद व अन्य कई उत्पाद तैयार किए जाते हैं।

सुरेन्द्र अवाना के पास 70 बीघा जमीन है जिससे उन्होंने 3 फार्म पोंड बना रखे हैं। 18 तरह के चारे 12000 फल वृक्ष लगा रखे हैं। साथ ही 500 से ज्यादा औषधीय पौधे लगा रखे हैं। फार्म पोंड में 4 प्रकार की मछलिया और बत्तक पालन का काम भी कर रहे है। फार्म पर 27 महिला व पुरूषो को रोजगार दे रखा हैं।

गौ माता के गोबर से कार्बनिक खाद, कार्बनिक रसायन व गोबर की इंटे भी बना रहे हैं। गौ माता का आर्गेनिक दूध जयपुर शहर में 80 रूपये लीटर व घी 1800 रूपये लीटर बिक रहा है। साथ ही में बकरी पालन भी कर रहे है।

सुरेन्द्र अवाना को लोग पेड़ वाले गुरूजी भी कहते है क्योंकि उन्होंने अब तक 40000 पेड़ लगाये है अपने जीवनकाल में उनका मानना है की हर व्यक्ति को अपने जीवनकाल में करीब 21 पेड़ लगाने चाहिए। सुरेन्द्र जी अवाना को ये काम करते हुए 1 वर्ष से अधिक का समय हो गया है। 1 वर्षो पहले उनके मन में ये बात आई थी और उसके बाद उन्होंने रोज एक वृक्ष लगाना चालु कर दिया और देखते–देखते आज तक उन्होंने 40000 से अधिक वृक्ष लगा दिए ।

समन्वित खेती: दुगुनी आय का सर्वोत्तम उपाय

कृषक का नाम : श्री नारायण सेपट
पिता का नाम : श्री नन्दा राम सेपट
गांव : जोशीवास, तहसील-फुलेरा, जिला-जयपुर
मोबाईल नम्बर : 9828205734
आवंटित रेडी छात्रा का नाम : पूजा दोतानियाँ

यह कहानी है प्रगतिशील किसान श्री नारायण सेपट निवासी जोशीवास, त. फुलेरा, जिला जयपुर की है। इनके पास 4 हेक्टयर जमीन है। प्रगतिशील कृषक वैज्ञानिकों की सलाह से अपने खेत पर समन्वित कृषि करते हैं। ये समय–समय पर कृषि पर्यवेषक की सलाह लेते रहते है तथा विभिन्न जगहों पर होने वाली बैठको मे भाग लेते है। इनके यहां गोबर की खाद से वर्मीकम्पोस्ट बनाते है, जिसका उपयोग खेती मे अच्छी पैदावार के लिए करते है। इसके अलावा ये पशुपालन तथा बुंद बुंद सिचांई से खेती कर अधिक मुनाफा कमा रहे हैं।

पशुपालनः– किसान के पास कुल 10 पशु है जिनमे 3 गाय और 2 भैंस तथा 5 छोटे बछडे हैं। गायों में होलस्टीन व जर्सी नस्ल है तथा भैंस की मुर्रा नस्ल है। इनसे किसान को एक महीने मे 28,200 रुपये की आय मिलती है। ये पशुओं को अच्छा चारा तथा पौष्टिक आहार खिलाते हैं। डेयरी मे रोजाना लगभग 20 लीटर दूध बेचते हैं।

सारणी– 1. पशुपालन से मिलने वाली कुल वार्षिक आमदनी का विवरण, वर्ष 2019–20

क्र. स.	विवरण नस्ल	पशुधन संख्या	दुध उत्पादन से एक वर्ष मे कुल आय				कुल व्यय (₹)	शुद्ध आय (₹)
			दूध/दिन	रूपये/लीटर	रुपये/माह	रुपये/वर्ष		
1.	भैस मुर्रा	2	20 ली.	38	22800	205200	80000	125200
2.	गाय होलस्टीन	2	30 ली.	28	25200	226800	80000	146800
	कुल						160000	272000

वर्मीकम्पोस्ट :– इन्होने अपने गांव के कृषि पर्यवेक्षक की सलाह से केंचुआ खाद बनाने की तकनीक लेकर राज्य सरकार द्वारा केंचुआ खाद उत्पादन करने के लिए रू. 5000 का अनुदान प्राप्त किया तथा इस केंचुआ खाद का उपयोग खेत में करने से मृदा की उर्वरता शक्ति में वृद्धि हुई जिससे इन्हे अधिक लाभ प्राप्त हुआ तथा रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता में कमी आई।

बूंद–बूंद सिचांई :–

श्री सेपट ने अपने 6 बीघा खेत में बूंद–बूंद सिंचाई प्रणाली लगा रखी है। इसका उपयोग सब्जी एवं फसलोत्पादन में किया जा रहा है, जिससे कम लागत व कम पानी में ये अधिक मुनाफा कमा रहे है।

सारणी नं. 2–फसलोत्पादन की औसत वार्षिक आय–व्यय का विवरण, वर्ष 2019–20

क्र. सं.	फसल	क्षेत्रफल (है.)	उत्पादन (क्विंटल)		कुल आय (₹)	कुल व्यय (₹)	शुद्ध आय (₹)
			दाना	चारा			
1.	बाजरा	1.5	20	40	34000	15000	19000
2.	मूंगफली	1.5	40	30	160000	25000	135000
3.	ग्वार	1	10	10	100000	5000	95000
4.	जौ	1	30	20	50000	5000	45000
5.	गेंहू	1.5	40	60	100000	10000	90000
6.	प्याज	1.5	500	0	200000	15000	185000
						कुल	**569000**

समन्वित कृषि से शुद्ध वार्षिक आय = 272000 + 569000 = ₹ 841000 है।

समन्वित कृषि से किसान बना खुशहाल

किसान का नाम : श्री किशना राम जाट

पिता नाम : श्री नरसाराम जाट

पता : भोजपुरा कलां, तहसील-किशनगढ़ रेनवाल, जिला-जयपुर

मोबाइल नम्बर : 9887969372

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : प्रियंका जितरवाल

जयपुर जिले के प्रगतिशील कृषक किशना राम जाट की सफलता की कहानी है, जिनके पास कुल 3.0 हैक्टयर जमीन है एवं 2.80 हैक्टयर जमीन पर अपनी खेती करते है। श्री किशना राम को समन्वित कृषि में उत्कृष्ट कार्य करने पर आत्मा योजना के अंतर्गत 11000 रुपए पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस क्षेत्र के कृषकों के लिए कृषि एव पशुपालन ही जीवनव्यापन का एकमात्र सहारा है, इस गांव के कृषकों में से एक कृषक श्री किशनाराम जाट ने उन्नत कृषि, जैविक खेती एवम् पशुपालन में ज्यादा रुचि दिखाई। वर्ष 2015 से फसल व सब्जी उत्पादन करना शुरु किया। इनकी इस कठोर मेहनत के परिणामस्वरूप इनको समन्वित कृषि से आमदनी होने लगी। कुछ समय बाद किसान ने अपने खेत में 2 बीघा जमीन पर पॉलीहाउस बनाया और इसमें बूंद–बूंद सिंचाई व्यवस्था के बाद कार्बनिक खाद व जैविक उर्वरक के साथ साथ कीट नियंत्रण के लिए भी जैविक रसायन का भी न्यायोचित इस्तेमाल शुरू किया। साथ ही साथ सरकार से लोन पर सोलर, फार्म–पोंड भी अपने खेत में लगाए जिससे उनको पानी व बिजली की बचत होती हैं। कृषक ने सरकार से जो लोन लिया था वो अपनी मेहनत से की गई खेती व विभिन्न व्यवसायों से पुरा चुका दिया है।

कृषि से आमदनी शुरू होने लगी, जिससे इन्होंने पशुओं की उन्नत नस्ल व उनकी संख्या में वृद्धि कर अपने घर में चार मुर्रा भैंस, चार गाय व एक बकरी रखी है, जिसके लिए खुद के खेत का हरा चारा काम में लेते हैं, तथा सूखे चारे को यूरिया व मोलासस से उपचारित करके पशुओं को खिलाते हैं, इनकी देखभाल इनका परिवार स्वयं करता है।

हलधर टाइम्स

5वीं पास किशनाराम की आय 25 लाख

इसके साथ ही इन्होंने मुर्गीपालन का व्यवसाय भी शुरू किया एवम् अच्छी आमदनी प्राप्त की। पॉलीहाउस में काम के लिए पाच लोगों को रोजगार पर व मुर्गीफार्म पर तीन लोगों को रोजगार पर रखा है। परिवार के उद्देश्य के लिए अपने घर की खाली जमीन पर इन्होंने फलदार पेड़ भी लगा रखे हैं, जिनमें कार्बनिक खाद का उपयोग करते है। आज कृषक के पास खुद कि पोलीहाउस में उपयोग ली जाने वाली पॉलीथीन, ड्रीप की दुकान है। प्याज का भंडारण स्वयं के खेत में करते है।

सारणी नं. 1 : समन्वित कृषि से प्राप्त औसत वार्षिक आय–व्यय का विवरण (रूपयों में)

क.सं.	फसल	क्षेत्र /संख्या (है.)	कुल आय	कुल व्यय	शुद्व आय
1	खरीफ + रबी	1.0 + 1.5 हैक्टयर	250000	93000	157000
2	सब्जी उत्पादन	3.0 हैक्टयर	1540720	511780	1028940
3	पशुपालन	4 दुधारू पशु	220000	104000	116000
4.	मुर्गीपालन	6,000 ब्रोअलर	1400000	1200000 (1.5 माह में)	200000
		कुल	**3410720**	**1908780**	**1501940**

समन्वित जैविक कृषि से प्राप्त शुद्व वार्षिक आय = 15 लाख रूपये

कृषि के साथ–साथ पशुपालन तथा सोलर सिस्टम बना लाभकारी व्यवसाय

कृषक का नाम : हनुमान सहाय जाट

पिता का नाम : श्री सेडु राम जाट

गांव : अनौपपुरा, तहसील- आमेर, जिला- जयपुर

मोबाइल नम्बर : 8233903393, 9571665943

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : मंजू चौधरी

यह सफलता की कहानी है प्रगति शील किसान श्री हनुमान सहाय जाट की जिनके पास कृषि एवं पशुपालन के लिए कुल 50 बीघा जमीन है। इन्होंने अपनी फसल से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए वर्ष 2014 में सोलर सिस्टम अपनाया तथा वर्ष 2019 में ड्रिप सिंचाई सिस्टम लगाया तथा कृषि पर्यवेक्षक के अनुसार इनको पंचायत स्तर पर प्रगतिशील किसान अवार्ड से सम्मानित किया गया।

श्री हनुमान जी की आय का मुख्य स्त्रोत 30 दुधारू पशुओं की उन्नत डेयरी है जिसमें प्रतिदिन 240 लीटर दूध बिक्री करने पर सालाना औसतन 21.60 लाख की आय हुई जिसमें से कुल खर्चा 8.64 लाख (सुखा चारा + दाना खर्च 46800 + चिकित्सा खर्च 156000 + मजदूरी खर्च 240000) करने के पश्चात पशुपालन से शुद्ध वार्षिक लाभ 12.96 लाख औसतन रहता है।

सोलर सिस्टम लगाकर इन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, टांकरडा के परामर्श से गेंहू तथा जौ की उन्नत किस्मों 3.0 हैक्टयर में 180 क्विंटल अनाज का उत्पादन लिया जिसकी बिक्री करने पर 143750 रूपये का शुद्ध लाभ कमाया तथा खरीफ में 3.0 हैक्टयर में मूगंफली की एम–13 तथा जी–20 किस्मों की खेती से 75 क्विंटल मूंगफली पैदा की जिसकी बिक्री से 160000 रूपये तथा बाजरें की निर्मल 1651 किस्म की 2.2 हैक्टयर खेती से 50000 रूपये तथा सब्जियों में ककड़ी तरबूज की 2.0 हैक्टयर में मल्चिंग व ड्रिप से खेती करके 4.0 लाख रूपये तक का शुद्ध मुनाफा कमाया है।

इस प्रकार श्री हनुमान नें पशुपालन तथा सोलर सिस्टम से सब्जियों तथा अनाज के उत्पादन से 18.50 लाख रूपये कमाकर पशुपालन व कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाया।

किसान खेमाराम ने अपने गांव को बना दिया मिनी इजरायल, सालाना आय करीब एक करोड़ रुपय

कृषक का नाम : **खेमा राम**

गांव : गुड़ा कुमावतान, जिला-जयपुर

मोबाइल नम्बर : 9828057599

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : सुनिता खोकर

पढ़िए किसान खेमाराम की सफलता की कहानी, कैसे उन्होंने खेती को बनाया मुनाफे का रोजगार और कैसे एक किसान खेती से एक करोड़ रुपए का टर्नओवर करता है। खेती किसानी के मामले में इजरायल को दुनिया का सबसे हाईटेक देश माना जाता है। वहां रेगिस्तान में ओस से सिंचाई होती है, दीवारों पर गेहूं, धान उगाए जाते हैं, भारत के लाखों लोगों के लिए ये एक सपना ही है। इजरायल की तर्ज पर राजस्थान के एक किसान ने खेती शुरू की और आज उनका सालाना टर्नओवर सुनकर आप उनकी तारीफ किए बिना नहीं रह पाएंगे।

दिल्ली से करीब 300 किलोमीटर दूर राजस्थान के जयपुर जिले में एक गांव है गुड़ा कुमावतान। ये किसान खेमाराम चौधरी (45 वर्ष) का गांव है। खेमाराम ने तकनीकी और अपने ज्ञान का ऐसा तालमेल बैठाया कि वो लाखों किसानों के लिए उदाहरण बन गए हैं। खेमाराम अपनी खेती से सालाना एक करोड़ रूपये का टर्नओवर ले रहे हैं।

सरकारी सब्सिडी से लगाया पहला पॉली हाउस

चार हजार वर्गमीटर में एक पॉली हाउस लगाने में 33 लाख का खर्चा आया, जिसमे से नौ लाख इन्हे देना पड़ा जो कि बैंक से लोन लिया था, बाकी सब्सिडी मिल गयी थी। पहली बार खीरा बोए करीब डेढ़ लाख रूपए इसमे खर्च हुए। चार महीने में ही 12 लाख रुपए का खीरा बेचा, ये खेती को लेकर इनका पहला अनुभव था। वो आगे बताते हैं, "इतनी जल्दी मैं बैंक का कर्ज चुका पाऊंगा ऐसा मैंने सोचा नहीं था पर जैसे ही चार महीने में ही अच्छा मुनाफा मिला, मैंने तुरंत बैंक का कर्जा अदा कर दिया। चार हजार वर्गमीटर से शुरुआत की थी आज तीस हजार वर्गमीटर में पॉली हाउस लगा है।

मिनी इजरायल के नाम से मशहूर है क्षेत्र

खेमाराम चौधरी राजस्थान के पहले किसान थे जिन्होंने इजरायल के इस मॉडल की शुरुआत की थी। आज इनके पास खुद के सात पॉली हाउस हैं, दो तालाब हैं, चार हजार वर्गमीटर में फैन पैड है, 40 किलोवाट का सोलर पैनल है। इनके देखा–देखी से आसपास के पांच किलोमीटर के दायरे में लगभग 200 पॉली हाउस बन गये हैं। इस जिले के किसान संरक्षित खेती करके अब अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। पॉली हाउस लगे इस पूरे क्षेत्र को लोग अब मिनी इजरायल के नाम से जानते हैं। खेमाराम का कहना है, अगर किसान को कृषि के नये तौर तरीके पता हों और किसान मेहनत कर पाएं तो उसकी आय दोगुनी नहीं बल्कि दस गुनी बढ़ सकती है।

इनके खेत में राजस्थान का पहला फैन पैड

फैन पैड (वातानुकूलित) का मतलब पूरे साल जब चाहें जो फसल ले सकते हैं। इसकी लागत बहुत ज्यादा है, इसलिए इसको लगाने की हिम्मत एक आम किसान की नहीं हैं। 80 लाख की लागत में 10 हजार वर्ग मीटर में फैन पैड

लगाने वाले खेमाराम ने बताया, "पूरे साल इसकी आक्सीजन में जिस तापमान पर जो फसल लेना चाहें ले सकते हैं, मै खरबूजा और खीरा ही लेता हूँ, इसमे लागत ज्यादा आती है लेकिन मुनाफा भी चार गुना होता है। डेढ़ महीने बाद इस खेत से खीरा निकलने लगेगा, जब खरबूजा कहीं नहीं उगता उस समय फैन पैड में इसकी अच्छी उपज और अच्छा भाव ले लेते हैं।" वो आगे बताते हैं, "खीरा और खरबूजा का बहुत अच्छा मुनाफा मिलता है, इसमें एक तरफ 23 पंखे लगें हैं दूसरी तरफ फब्बारे से पानी चलता रहता है। गर्मी में जब तापमान ज्यादा रहता है तो सोलर से ये पंखा चलते हैं,फसल की जरूरत के हिसाब से वातावरण मिलता है, जिससे पैदावार अच्छी होती है।

तालाब के पानी से करते हैं छह महीने ड्रिप इरीगेशन

खेमाराम ने अपनी आधा हेक्टेयर जमीन में दो तालाब बनाए हैं, जिसमें बरसात का पानी एकत्रित हो जाता है। इस पानी से छह महीने तक ड्रिप–इरीगेशन से सिंचाई करते है। ड्रिप से सिंचाई में बहुत पैसा बच जाता है और मल्च पद्धति से फसल मौसम की मार, खरपतवार से बच जाती है जिससे अच्छी पैदावार होती है। तरबूज, ककड़ी, टिंडे और फूलों की खेती में अच्छा मुनाफा है। सरकार इसमें अच्छी सब्सिडी देती है, एक बार लागत लगाने के बाद इससे अच्छी उपज ली जा सकती है।

खेती में सराहनीय कार्यों के लिए मिल चुका है नेशनल अवार्ड

खरबूजा की बेहतर पैदावार के लिए इन्हें साल 2015 में महिंद्रा की तरफ से नेशनल अवार्ड केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह द्वारा दिल्ली में दिया गया। इन्हें कृषि विभाग की तरफ से सोलर पैनल लगाने के लिए सम्मानित किया जा चुका है।

प्रतिदिन इनके मिनी इजरायल को देखने आते हैं किसान

राजस्थान के इस मिनी इजरायल की चर्चा पूरे राज्य के साथ कई अन्य प्रदेशों और विदेश के भी कई हिस्सों में है। खेती के इस बेहतरीन मॉडल को देखने यहाँ किसान हर दिन आते रहते हैं। खेमाराम ने कहा, "आज इस बात की मुझे बेहद खुशी है कि इजरायल मॉडल की शुरुआत राजस्थान में हमने की थी लेकिन आज ये संख्या सैकड़ों में पहुंच गयी है, किसान लगातार इसी ढंग से खेती करने की कोशिश मे लगे हैं।

राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अंतर्गत गांव गुड्डा कुमावतान में प्रभाव –

निर्माण वर्ष	क्षेत्रफल (वर्ग मीटर)	योजना का नाम	अनुदान राशि (₹)	कुल राशि (₹)	कृषक द्वारा लगाई राशि (₹)	बचत (₹)	कृषक का नाम
2012–13	4000	ग्रीनहाउस	28,05,000	37,40,000	9,35,000	11 लाख	सुन्दरी देवी w/o नाथुराम
2013–14	4000	ग्रीनहाउस	28,05,000	37,40,000	9,35,000	10 लाख	कमली देवी w/o खेमाराम
2014–15	4000	फैनबेल्ट पॉली हाउस	56,10,000	74,80,000	18,70,000	22 लाख	दिनेश s/o खेमाराम
2018–19	9000	शेडनेट हाउस	28,05,000	43,05,000	15,00,000	12 लाख	गंगाराम s/o भेंरूराम
2018–19	2000	पॉलीहाउस	28,05,000	36,,67,000	18,58000	11 लाख	खेमाराम

खेत तलाई से किसान की कायापलट

किसान का नाम : रामेश्वर लाल धायल
पिता का नाम : श्री कानाराम धायल
गांव : ड्योढी, तहसील-किशनगढ़ रेनवाल, जिला-जयपुर
मोबाइल नम्बर : 9414823984
आवंटित रेडी छात्र का नाम : सम्पत चौधरी

श्रीमान रामेश्वर लाल धायल s/o कानाराम धायल ड्योढी गांव के प्रगतिशील किसान है। इनका संबंध शुरूआत से ही कृषि से रहा है। इन्होंने अपनी पढ़ाई कृषि क्षेत्र में ही की है। इनकी स्नातक की शिक्षा श्री कर्ण नरेंद्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर से हुई है। किसान के पास कुल जमीन 5 हैक्टयर (20 बीघा) है। जिसमें ये कृषि, पशुपालन व उद्यान आदि कार्य कर रहे थे, पर किसान को इन कार्यो से लाभ प्राप्त नहीं हो रहा था । फिर किसान ने यहा के वातावरण को देखते हुए (पानी की कमी व खारे पानी की समस्या) खेत तलाई बनाने की सोची। किसान को इसके लिए प्रेरणा व पूरी जानकारी कृषि विभाग से मिली फिर किसान ने अपने खेत मे 50x50x3मीटर का फार्म पॉण्ड बनाया जिसके अंदर 75000 लीटर पानी आता है। इसके लिए सरकार ने भी मदद की। सरकार ने कुल लागत का 50 प्रतिशत अनुदान राशि दी फिर किसान ने अपने खेत मे सिंचाई की ड्रिप व फव्वारा विधि स्थापित की।

क्र.सं.	विषय	आकार	अनुदान	कुल लागत	क्षमता
1.	फार्म पॉण्ड	50x50x3मीटर	50 प्रतिशत	9.50 लाख	75000 लीटर

बैंगन की खेती : किसान ने सब्जियों के अंदर जलवायु के अनुकूल बैगन की खेती ली जो एक कम पानी व सूखा सहनशील फसल है। किसान ने फसल के बारे मे पूरी जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र, चौमू से ली। किसान अपने खेत में जैविक विधि से खेती कर रहा है। फसल बुआई के समय गोबर की खाद काम मे ली। किसान अपने खेत में रोगों व कीटों का नियंत्रण भी जैविक तरीको से करता है। किसान हमेशा नवीनतम तकनीकों से जुड़ा रहता है। सिंचाई का साधन ड्रिप विधि है। किसान ने उतम गुणवत्ता का बीज कृषि विज्ञान केंद्र से लिया था। किसान ने अपने खेत मे गोलाकार व कांटे वाले बैंगन की संकर किस्म अर्का–नवनीत ली है। यह अधिक उपज देती है ।

क्र.सं.	फसल	क्षेत्र	पौधों की संख्या	कुल लागत (₹)	कुल उत्पादन (₹)
1.	बैंगन	0.4 एकड़	34000 / बीघा	1 लाख	240000

इस प्रकार किसान खेत तलाई से सब्जियों की खेती करके सशक्त हुआ।

पॉली हाऊस में सब्जी उत्पादन कर मुनाफा कमाया

किसान का नाम : **श्री बजरंग लाल शर्मा**

गांव : भोजपुरा कला, तहसील-किशनगढ़ रेनवाल, जिला-जयपुर

मोबाइल नंबर : 9828532996

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : राखी कुडी

यह कहानी प्रगतिशील किसान श्री बजरंगलाल शर्मा की है, जो भोजपुरा कला में रहते हैं। इनके पास 4 बीघा जमीन है। इन्होंने अपने खेत पर वर्ष 2017 में सोलर ड्रिप सिस्टम और फार्म पॉन्ड बनाया तथा अपने मित्र से प्रोत्साहित होकर सब्जी उत्पादन का कार्य शुरू किया। बूंद बूंद सिंचाई के द्वारा सब्जियों का काफी अच्छा उत्पादन ले रहे हैं। इस समय टमाटर की फसल और मिर्ची की फसल लगी हुई है। इनकी नर्सरी भी वह खुद ही तैयार करते हैं।

जायद की फसलों में यह खीरा और ककड़ी उगाते हैं। इनके पास दो फार्म पॉन्ड है जिनकी सहायता से वह फसलों की सिंचाई करते हैं। इन्होंने अपने खेत पर बेड बनाकर मल्चिग भी कर रखी है। जिसकी वजह से खरपतवार कम उगते हैं तथा नमी का भी संरक्षण होता है तथा बूंद बूंद सिंचाई की वजह से पानी की बचत होती है। वर्तमान में पॉली हाऊस में खीरा, टमाटर तथा मिर्ची को बूंद बूंद सिंचाई के द्वारा खेत में मल्चिंग करके उगा रखा है।

सारणी नं.–1 पॉली हाऊस में सब्जी उत्पादन से औसत आय विवरण

क्र.सं.	फसल	क्षेत्र (वर्ग मीटर)	उत्पादन (किलो)	बाजार भाव (₹)	आय (₹)
1	टमाटर	3000	13000	20	2,20,000
2	मिर्ची	1500	32000	25	4,00,000
3	खीरा	1800	27000	15	3,35,000
	कुल आय				**9,55,000**

किसान पोलीहाउस में खाद, बीज, उर्वरक तथा मजदूरी पर कुल खर्चा 4.30 लाख करके एक सीजन में कुल आय 9.55 लाख प्राप्त कर शुद्ध वार्षिक आय 5.25 लाख कमाकर खुश है। वह इस कार्य को करके गर्व महसूस करते हैं तथा अपने मित्रों को भी सब्जी के उत्पादन के लिए प्रोत्साहित करते हैं ताकि वे भी अपनी आय को दोगुनी कर सके।

समन्वित कृषि से किसान हुआ कुशल

किसान का नाम : **श्री लालाराम जाट**

पिता का नाम : **श्री नरसाराम जाट**

पता : **भोजपुरा कलां, जोबनेर, जिला–जयपुर**

मोबाइल नम्बर : **9982155398**

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : संतरा चौधरी

यह कहानी श्री लालाराम जाट पिता श्री नरसाराम जाट की है जो कि वर्ष 1980 से पूर्व भैंसावा (जयपुर) में रहते थे। वहां की मिट्टी की उपज की कमी के कारण उन्होंने भैंसवा से अपनी 3 बीघा जमीन बेचकर वर्ष 1980 में भोजपुरा कलां में 10 बीघा जमीन खरीद ली, यहां पर प्याज और मूंगफली की फसल पर ध्यान देकर अपनी आय का मुख्य साधन बनाया और साथ में बाजरा, गेहूं, जौ, सरसों आदि फसलों से अपनी घरेलू आवश्यकता पूरी की। फिर वर्ष 2000 में लालाराम जी ने 3.5 बीघा जमीन और खरीद ली, साथ साथ में पशुपालन, कृषि, व जैविक खेती प्रशिक्षण के आयोजनो में भाग लिया और खेती में उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषि–पर्यवेक्षक की मदद से प्याज व मूंगफली की फसलों की विभिन्न किस्मों की खेती की और अपनी आय को बढ़ाया। वर्ष 2010 में लालाराम जी ने ट्रैक्टर और थ्रेसिंग मशीन खरीद ली। फिर थ्रेसिंग मशीन से अपनी आय में और बढ़ोतरी की। पानी की कमी के कारण बाजरा और जौ की फसल पर ध्यान देने लगे और फसलों की पानी पूर्ति के लिए फार्म–पोंड बनाया।

घटक	क्षेत्र/मूल्य	उत्पादन
पशुपालन		
1. मुर्रा भैंस	60 रू/लीटर	2000 रू/माह
2. जर्सी गाय	40 रु/लीटर	2500 रु/माह
फसल		
मूंगफली	5 बीघा	25–30 क्विं.
प्याज	7 बीघा	90–100 क्विं.
बाजरा	5 बीघा	15–20 क्विं.
ग्वार	3 बीघा	14–15 क्विं.

इस प्रकार किसान लालाराम अपने परिवार को अच्छी तरह से सुख–साधन देकर नई तकनीकों को जानने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

सब्जियों की बंपर पैदावार से किसान हुआ सम्मानित

किसान का नाम : श्री सुरेश यादव

पिता का नाम : श्री रामलाल यादव

पता : ग्राम कालख, तहसील फुलेरा, जिला-जयपुर

मोबाइल नम्बर : 9571840512

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : सरिता चौधरी

पंचायत समिति स्तर पर पुरस्कृत जयपुर जिले के प्रगतिशील कृषक श्री सुरेश यादव के पास 25 बीघा जमीन है। ये मुख्य रूप से सब्जियों की खेती करते हैं, जैसे– टमाटर की इंसीकाल किस्म, खीरे की किंगस्टार किस्म, मिर्ची, तरबूज और खरबूजे की खेती मुख्य रूप से करते हैं। वर्ष 2014 में सोलर प्लांट लगवाया तथा वर्ष 2015 में 2 बीघा में पॉली हाउस का निर्माण करके इसमें टमाटर, खीरा उत्पादन करके बंम्पर पैदावार करने पर इनको वर्ष 2015–16 में पंचायत समिति सांभरलेक (आत्मा) जयपुर, राजस्थान द्वारा पुरस्कृत किया गया। ये और इनका परिवार एक अच्छे प्रबंधन के साथ खेती करते हैं।

ये सब्जियों की खेती वर्ष 2013 से कर रहे हैं, मुख्य रूप से इनके पास निम्न स्रोत है–

ईकाई	क्षेत्र (बीघा)	वर्ष
पॉली हाउस	2	2015
फार्म पॉन्ड	1.5	2013
सोलर प्लांट	1.5	2014

सारणी – पॉली हाउस आय का विवरण–

फसल का नाम	क्षेत्रफल (बीघा)	प्राप्त आय (₹)
टमाटर	7	4 लाख
खीरा	2.5	3–4 लाख

सालाना कुल सब्जियों की लागत =3 लाख रूपये

सालाना कुल बचत =7 लाख रूपये

इस प्रकार किसान श्री सुरेश यादव लगातार कृषि क्षेत्र में चार चांद लगा रहे हैं

एकीकृत कृषि से महिला किसान बनी समृद्ध

किसान का नाम : **श्रीमती कंचन देवी परवाल**

पति का नाम : **श्री विष्णु कुमार परवाल**

ग्राम : **खेड़ी आईदान का बास**

मोबाइल नम्बर : **9214413760**

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : संजना यादव

यह कहानी है महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाली श्रीमती कंचन देवी परवाल की। इन्होंने समन्वित कृषि व महिला शिक्षा को आगे बढ़ाया है। ये समय–समय पर कृषि अधिकारियों से सलाह लेकर खेती करती है। जिसमें पॉली हाउस, फार्म पॉन्ड, डेयरी फार्मिंग, वर्मी–कंपोस्ट आदि शामिल हैं। वे फसलें उगाती है जिसके लिए इन्होंने फार्म पर 10 मजदूर रखे हैं जो देखभाल करते हैं जिससे सालाना 5,00,000 रूपये की बचत होती है तथा इन्होंने जैविक खेती को भी आगे बढ़ाया है।

1. खेत तलाई :– इन्होंने वर्षा जल संग्रहण करने के लिए 40 फीट x 40 फीट लंबाई व चौड़ाई तथा गहराई 20 फीट की खेत तलाई बना रखा है जिसके लिए इनको राज्य सरकार द्वारा 90,000 रूपये की अनुदान राशि प्राप्त हुई है। इस पॉन्ड से सालभर फसलों को पानी मिल जाता है।

2. डेयरी:– इनके पास कुल पशु 100 है। जिनमें इन्होंने गिर व राठी नस्ल की गाय रख रखी है तथा इनको सालाना पांच लाख की बचत होती है तथा यह पशुओं का टीकाकरण समय–समय पर करवाती हैं तथा पशुओं को अच्छा आहार देती हैं।

फसल उत्पादन :– इन्होंने पॉली हाउस में अभी खीरे की फसल बुवाई कर रखी है जिसमें इन्होंने 38000 हजार रुपयों का बीज व 20000 रूपये कीटनाशक तथा दवाइयों पर खर्च किया है जिससे लगभग 350000 रूपये रुपए की उपज हो चुकी है। इनका बताना है कि लगभग 600000 रूपये के खीरे की पैदावार होगी जिससे इनको 75 प्रतिशत लाभ होता है, इसके लिए इन्होंने बूंद–बूंद सिंचाई पद्धति अपना रखी है।

सालाना लागत एवं बचत:–

विवरण	संख्या/क्षेत्र	कुल व्यय रूपये	कुल वार्षिक आय रूपये
पशुधन गिर एवं राठी	100	चारा एवं आहार 3 लाख	5 लाख
खीरा	1 बीघा	38000 रूपये का बीज व 20000 रूपये का कीटनाशक व अन्य खर्च	5 लाख
ग्वार	5 हैक्टर	25000 रूपय हजार का खर्च	एक लाख पचास हजार
		कुल शुद्ध बचत	**7.67 लाख रूपये**

समन्वित कृषि से खुशहाल बना किसान

किसान का नाम : श्री काना राम ताकर

पिता का नाम : श्री नन्दाराम

पता : ग्राम बस्सी नागा, जोबनेर, जयपुर

मोबाइल नम्बर : 6378271448

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : पिंकी चौधरी

श्री कानाराम ताकर समन्वित कृषि को अपनाते है। यह जैविक खेती अपनाते हैं तथा समय समय पर कृषि पर्यवेक्षक से सलाह लेते है। इनके पास फॉर्म पोण्ड है जिसमे वर्षा का जल संग्रहित किया जाता है, जिसे कृषि कार्यो में उपयोग करते है तथा पशुपालन व्यवसाय में गाय व भैसों से भी अच्छी इनकम कमाते है।

फॉर्मपोण्ड :– इन्होने वर्षा के जल के संग्रहण करने के लिए फार्मपोण्ड बना रखा है इसकी लम्बाई व चौड़ाई 80 फीट x 80 फीट तथा गहराई 20 फीट है जिसकी भराव क्षमता 41 लाख लीटर पानी की है। इससे साल भर फसलो को पानी मिलता है।

बूंद बूंद सिचाई विधि :– 2016 में इन्होंने बूंद–बूंद सिंचाई विधि को अपनाया जिसे पर 50 प्रतिशत सब्सिडी सरकार द्वारा दी गई। इस विधि से मिर्च टमाटर, तरबूज आदि की फसलें लेते है।

फसल उत्पादन :– इन्होंने बाजरे व मूंगफली की फसल लगा रखी है जिसमें से 4 बीघा में बाजरे की निर्मला–165 किस्म लगाई है 4–5 किलों बीज प्रति हेक्टेयर की दर काम में लेते है। तथा चोमू मण्डी में 1450 क्विंटल के हिसाब से बेच तथा मूंगफली की रसदार किस्म लगाई जिसको 4000–5000 क्विंटल के हिसाब से बगरू मंडी में बेचा।

पशुपालन दुग्ध से प्राप्त आय का विवरण :– 3 मुर्रा भेंस तथा 2जर्सी गाय के दूध बिक्री से सालाना 2.10 लाख की आय अर्जित कर रहे है।

समन्वित कृषि से कानाराम की वार्षिक आय व्यय विवरण :

क.सं.	विवरण	क्षेत्र	कुल आय (₹)	कुल व्यय (₹)	कुल वार्षिक आय (₹)
1	फसल उत्पादन	3.0 हैक्टयर	3.00 लाख	0.50 लाख	2.50 लाख
2	सब्जी उत्पादन	0.4 हैक्टयर	1.20 लाख	0.40 लाख	0.80 लाख
3	पशुपालन दुग्ध से	5 दुधारू पशु	4.90 लाख	2.80 लाख	2.10 लाख

इस प्रकार कानाराम समन्वित कृषि से शुद्ध 6.40 लाख रूपये वार्षिक आय ले रहे है।

समन्वित कृषि से किसान हुआ मालामाल

किसान का नाम : **श्री रामधन जाट**

पिता का नाम : रामुराम जाट

गांव : हरिपुरा, तहसील–फुलेरा

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : रिंकी चौधरी

यह कहानी है रामधन जाट की है जो परंपरागत कृषि तरीकों से खेती करते थे जिससे इन्हें अत्यधिक मुनाफा नहीं होता था तथा उनके परिवार की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी। इनकी आजीविका कृषि पर ही आधारित थी। इसलिए इन्होंने अपनी कृषि पद्धति में सुधार करने की ठानी ये कृषक प्रशिक्षण सभाओं में शामिल हुए तथा कृषि के साथ–साथ समन्वित कृषि का प्रशिक्षण लिया। इन्होंने केंचुआ खाद का भी प्रयोग किया जिसमें यह रासायनिक उवर्रको के स्थान पर काम में ले रहे हैं जिससे इन्हें अधिक पैदावार मिल रही है। पानी की कमी को पूरा करने के लिए इन्होंने खेत तलाई भी बनवाया जिस पर राज्य सरकार द्वारा अनुदान दिया गया तथा सूक्ष्म सिंचाई पद्धति उपयोग में ली। अतिरिक्त आय के लिए उन्होंने कृषि पर्यवेक्षकों की सलाह ली जिससे अधिक मुनाफा मिल रहा है।

1. पशुपालन की आय का विवरण :–

विवरण	संख्या	औसत उत्पादन प्रतिपशु प्रतिवर्ष	कुल उत्पादन प्रतिवर्ष	औसत बाजार भाव	कुल आय रुपए (₹)	कुल व्यय प्रतिवर्ष (₹)	शुद्ध आय (₹)
गाय	2	4000 लीटर	8000 लीटर	30 / लीटर	240000	70,000	1,70,000
भैंस	2	2000 लीटर	4000 लीटर	50 / लीटर	2,00,000	80,000	1,20,000

सकल आय–4,40,000–1,50,000 = 2,90,000 पशुपालन से

2. सारणी फसल उत्पादन आय का विवरण:–

फसल	क्षेत्र	दाना उत्पादन (क्विंटल)	चारा उत्पादन (क्विंटल)	कुल आय (₹)	कुल व्यय (₹)	शुद्ध आय (₹)
खरीफ (बाजरा ग्वार मूंग)	8 हेक्टेयर	92	378	4,24,800	1,68,528	2,56,272
रबी (गेहूं चना जौ)	6 हेक्टेयर	84	342	3,49,600	1,20,000	2,29,600

समन्वित कृषि से प्राप्त शुद्ध आय = 2,90,000 + 4,85,872 = 7,75,872

एकीकृत खेती से किसान को लाभ

किसान का नाम : **श्री बन्नाराम जाट**
पिता : **श्री मोहरू राम**
पता : **ग्राम पोस्ट–मोखमपुरा, तहसील–मौजमाबाद, जिला–जयपुर**
मोबाईल नम्बर : **9928942518**
आवंटित रेडी छात्रा का नाम : सुमन डोडवाडिया

वर्तमान मे 70% जनसंख्या कृषि व पशुपालन पर आधारित है। जिसमे से यह एक है। **बन्नाराम** यह मध्यम वर्गीय परिवार के सदस्य है जो एक अच्छे पैमाने पर पशुपालन से अच्छा लाभ लेते है समय–समय पर कृषि पर्यवेक्षक की सलाह से 2.0 हैक्टयर क्षेत्र में फसलें–मूंग, बाजरा, ज्वार व मिर्च, टमाटर की पौध स्वंय नर्सरी में तैयार करते है।

आधुनिक गुण के साथ साथ इन्होंने नई तकनीकी का उपयोग करना भी शुरू किया है। जिसमे इनको अच्छा लाभ हुआ एव खेती करने मे सरलता हुई। इनके खेत मे आवश्कताअनुसार श्रमिक कार्य करते हें जिसमे श्रमिक के लिए भी आय का एक अच्छा साधन सिद्ध हुआ।

इन्होंने सोलरपम्प, पॉलीहाउस, स्प्रींकलर सिंचाई विधि आदि लगा रखे हैं। इन्होंने जैविक खेती को अपनाकर अच्छा लाभ प्राप्त किया। यह जैविक खेती करते हैं जिसमे 2 रुपये की दर पर ज्यादा मुनाफा होता हैं। यह खेती के साथ साथ पशुपालन भी करते हैं। जिसमे गाय व भैंस आदि रखते हैं। भैस का दुध 50 रुपये एवं गाय का दुध 40 रुपये लीटर तक जाता है।

पशुपालन से आय –

कुल पशु	कुल आय (रू)	कुल लागत (रू)	कुल लाभ (रू)
भैस 3	100000	55000	45000
गाय 1	45000	20000	20000
कुल	145000	75000	65000

समन्वित कृषि से बन्नाराम की वार्षिक आय व्यय विवरणः

क.सं.	विवरण	क्षेत्र/इकाई	कुल आय (₹)	कुल व्यय (₹)	कुल वार्षिक आय (₹)
1	फसल उत्पादन	2.2 हैक्टयर	180000	54000	144000
2	सब्जी उत्पादन (चेरी टमाटर)	0.2 हैक्टयर	150000	40000	90000
3	पशुपालन दुग्ध	4 दूधारू पशु	145000	75000	65000
	कुल		**475000**	**169000**	**299000**

इस प्रकार बन्नाराम समन्वित कृषि से 3.00 लाख रूपये शुद्ध वार्षिक आय ले रहे है।

जैविक खेती से सब्जी उत्पादन करके कमाया मुनाफा

किसान का नाम : **श्री केशरदेव जाट**

पता : ग्राम पोस्ट–अठवास, पं.सं- फतेहपुर, जिला- सीकर

मोबाईल नम्बर : 9672253541

आवंटित रेडी छात्र का नाम : राहुल त्यागी तथा निरज शर्मा

पुर्व में आमदनी	1.5 से 2.0 लाख
वर्तमान आमदनी	3.0 से 3.3 लाख वार्षिक
नवाचारी कदम	जैविक खेती

यह सफलता की कहानी सीकर जिले के फतेहपुर ब्लॉक के अठवास गांव के प्रगतिशील कृषक श्री केशरदेव जाट की है। जिन्होने कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर की "परम्परागत कृषि विकास योजना" के प्रशिक्षणों से प्रभावित होकर जैविक खेती पर ध्यान केन्द्रित करके अपने खेत पर पूर्ण जैविक खेती करने की ठानी। कृषक के पास 2.5 हैक्टयर जमीन है। केन्द्र के सम्पर्क में आने के बाद समय–समय पर प्रशिक्षणों में जैविक खेती, पशुपालन, बागवानी इत्यादि की जानकारी प्राप्त करते रहे तथा कृषि की नई तकनिकों, नवाचारों का प्रयोग तथा समय पर बुवाई, खरपतवार प्रबंधन, गोबर की खाद का सही तरीके से केचुंआ खाद बनाकर उपयोग करने जैसी कृषण क्रियाएं अपनाकर अनाज तथा सब्जियों के उत्पादन में वृद्धि प्राप्त की। वर्ष 2018–19 से केन्द्र की "परम्परागत कृषि विकास योजना" में गांव के दश किसानों के साथ स्वय जुडकर इन्होने जैविक खेती क्षेत्र में वृद्धि के साथ साधारण खेती को समन्वित कृषि प्रणाली" में बदलकर अतिरिक्त आय का साधन बढाया। इनके पास वर्तमान में 2 देशी गाय, 1 भैंस तथा 2 बछडें–बछडियां तथा 8 बकरें–बकरियां है। इनके पास कुल 2.5 हैक्टेयर जमीन है जिसमें 1 हैक्टयर में खरीफ में ग्वार, बाजरा तथा रबी में जैविक गेंहू, चना तथा 0.2 हैक्टयर में रिंजका, चरी बाजरा करने के साथ 0.3 हैक्टयर में सब्जी, 0.5 हैक्टयर में अनार के 180 पौधे लगा रखे है।

समन्वित खेती पद्धति में सुधार कर इन्होने इसे जैविक खेती में सब्जियों को अधिक अपनाने की सोचा। इनकी इस दृढ़ इच्छा शक्ति तथा कठोर मेहनत के परिणाम स्वरूप इनको समन्वित खेती पद्धति से अच्छी आमदनी होने लगी, जिससे इन्होंने जैविक खादों से गुणवतायुक्त फसल उत्पादन, डेयरी प्रबंधन में पशुओं के आहार में अजोला मिलाकर खिलाते है।

श्री केशरदेव की वर्तमान आय–व्यय का ब्यौरा उनके कथनानुसार निम्न प्रकार से हैः–

सारणी नं. 1 :– फसलोंत्पादन, सब्जी उत्पादन तथा पशुपालन सेप्राप्त औसत वार्षिक आय–व्यय का विवरण (रूपयों में) वर्ष 2019–20

क.सं.	फसल	क्षेत्र (है.)	कुल आय (रूपयों में)	कुल व्यय	शुद्व आय
1	खरीफ + रबी	1.0 + 1.0	180000	85000	95000
2	सब्जी उत्पादन	0.50	210000	65000	145000
3	पशुपालन	4 दुधारू पशु	200000	104000	96000
		कुल	590000	254000	336000

समन्वित जैविक कृषि से प्राप्त शुद्व वार्षिक आय = 336000 / रूपये

इस प्रकार कृषि महाविद्यालय, फतेहपुर के स्नातक के रेडी छात्रों ने 56 दिवसीय रेडी प्रोग्राम के दौरान खेत पर जानकारी लेकर पाया की केशर जी को वर्तमान में समन्वित कृषि में जैविक खेती के सभी स्रोतो से 3.3 लाख रूपये की अच्छी आमदनी प्राप्त हो रही है।

समन्वित कृषि से किसान की आमदनी में लगे चार चाँद

किसान का नाम : श्री मोहन सिंह राजपूत

पिता का नाम : श्री बाघ सिंह राजपूत

पता : गांव-कुच्यावास, पोस्ट-बस्सी नागा, जिला-जयपुर

मोबाइल नंबर : 9828269793

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : सीमा वर्मा

वर्मी–कल्चर ईकाईः– किसान के खेत पर वर्मी–कल्चर इकाई है जिससे जैविक खेती को बढ़ावा मिलता है। इस इकाई के निर्माण के लिए किसान को 50,000 की अनुदान राशि मिली।

पशुपालनः– वर्मी–कल्चर इकाई के साथ–साथ किसान पशुपालन भी करता है जिससे जैविक खेती को बढ़ावा मिलता है और पशुपालन मे उनके 10 मुर्रा नस्ल की भैंस है तथा 2 गाय जर्सी नस्ल की व 4 गाय देशी नस्ल की इनके साथ ही बकरियां भी है जो कि 10 है। खेती के लिए जैविक खाद भी उपलब्ध हो रही हैं।

सारणी नं. 1 : पशुपालन से प्राप्त औसत वार्षिक आय–व्यय का विवरण (रूपयों में) वर्ष 2019–20

क्र. सं.	विवरण	पशुधन संख्या	औसतन दूध उत्पादन/पशु/वर्ष (ली)	कुल दूध उत्पादन/वर्ष (ली.)	औसत बाजार भाव (ली.)	कुल आय (₹)	पशुधन उप उत्पाद से आय(₹)	कुल व्यय/वर्ष (₹)	कुल शुद्ध आय/वर्ष (₹)
1.	गाय (जर्सी)	2	4500	9000	30	270000	12000	120000	162000
2.	गाय (देशी)	4	1250	5000	35	175000	15000	140000	50000
3.	भैंस (मुर्रा)	6	2500	10000	45	450000	15000	250000	215000
4.	बकरी (सिरोही)	5	700	3500	25	87500	10000	80000	17500
	कुल					982500	52000	590000	444500

कुल शुद्ध आय/वर्ष = औसत आय – व्यय=1034500–590000 = रूपये 444500

फसल उत्पादनः– किसान फसल उत्पादन करते हैं इनके पास उनके कुल 12 हैक्टेयर भूमि है जो कि उपजाऊ है तथा जिसमें कुआं एवं नलकूप सिंचाई के साधन है। तथा सिंचाई फव्वारा तथा ड्रीप विधी से करते है। फसल उत्पादन के लिए यह बाजरा, मूंग, मूंगफली, ग्वार ,ज्वार आदि फसलों की कर रखी है तथा बुआई के लिए बीज संकर किस्म का प्रयोग करते हैं। इन्होंने फव्वारा एवं बूंद–बूंद सिंचाई विधि अपनायी हुई है।

अनार की खेतीः– किसान अनार की खेती भी करते हैं जिससे अच्छी आय मिलती हैं। अनार का बगीचा 6 साल पुराना है जो कि वर्गाकार विधी से लगाया गया है। यह सिंदूरी किस्म का प्रयोग करते है। एक पौधे से 40–50 किलोग्राम प्रति पौधा तक फल प्राप्त होते हैं।

एकीकृत खेती प्रणाली से किसान हुआ लाभान्वित

कृषि व संबंधित क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने पर मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित

किसान का नाम : श्री अजीत सिंह जाट

पिता का नाम : श्री सुवालाल जाट

पता : गांव-सुरपुरा (बोराज), तहसील-फुलेरा

मोबाइल नंबर : 9587481221

आवंटित रेडी छात्र का नाम : रितिका मीणा

यह कहानी एक प्रगतिशील किसान श्रीमान अजीत सिंह जी की है जिन्होंने असिंचित क्षेत्र में सालाना 15 से 20 लाख की आय प्राप्त की जिसके लिए उन्हें वर्ष 2016 में राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। उनके पास कुल 15 बीघा जमीन है जिसमें उन्होंने एक पॉली हाउस, एक शेडनेट हाउस, एक पॉन्ड बनवा रखा है। वर्ष 2014 में उनके ट्यूबवेल में पानी कम होने के कारण उन्होंने वर्ष 2015 में पूर्ण का निर्माण करवाया, और अपने आवास स्थान पर जल संरक्षण प्रणाली अपनाई जिसका पूरा पानी, पॉन्ड में एकत्रित होता है वह जिसके द्वारा वे खीरे की खेती करते है।

साल दर साल सफलता की ओर बढ़ते कदम

वर्ष	नई तकनीक	कुल क्षेत्र	फसल	कुल उत्पादन
2010	बूंद–बूंद सिंचाई प्रणाली	एक हेक्टेयर	तरबूज	12 से 15 टन
2012–13	शेडनेट हाउस	1.5 हेक्टेयर	खीरा	50 टन
2015–16	पॉलीहाउस	4000 वर्गमीटर	खीरा	50 से 60 क्विंटल

इन्हीं अथ्क प्रयासों की वजह से उन्हें वर्ष 2016 में श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया, मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।

इसके उपरांत वर्ष 2017 में जयपुर जिला एग्रीकल्चर डीलर संस्था द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। उनके इन्हीं अथ्क प्रयासों की वजह से आज वह गांव के प्रगतिशील किसानों की सूची में आते हैं।

जोबनेर के किसान का जैविक थाई एप्पल बेर में नवाचार

किसान का नाम : **श्री प्रहलाद जाट**

पिता का नाम : **श्री छीतरमल चिलावरियॉ**

पता : **गांव- चिरणोटीया, पंचायत-मुरलीपुरा, जोबनेर, तहसील-फुलेरा, जिला-जयपुर**

मोबाइल नंबर : **7891234069**

आवंटित रेडी छात्र का नाम : दीपक शर्मा

यह सफलता की कहानी प्रगतिशील युवा कृषक प्रहलाद जाट की है जिनकी पहचान सी.एम.एस.डी. जैविक फार्म, चिरणोटीया के नाम से प्रसिद्व है जिन्होंने पशुपालन के साथ जैविक सब्जी उत्पादन, उद्यानिकी में थाई एप्पल लगाकर उत्कृष्ट कार्य किया है।

कृषक के पास कुल 7 हेक्टेयर जमीन है तथा दुधारू पशुओं में 4 गाय, 5 भैंस तथा 20 बकरियां ही आजिविका का मुख्य स्रोत है। क्षेत्र में सिंचाई पानी की कमी के कारण फसलोंत्पादन नही कर पा रहे थे इस समस्या के समाधान के लिए इन्होने गतवर्ष 2020 में ही वर्षाजल के संरक्षण के लिए 60 गुणा 40 फीट आकार का 8 फीट गहरा फार्मपॉड बनाकर 2.5 लाख लीटर पानी का भण्डारण करके सब्जी उत्पादन का कार्य शुरू किया।

प्रहलाद ने डॉ. अजय कुमार गौरा तथा कृषि महाविद्यालय, जोबनेर के प्रसार शिक्षा विभाग, वैज्ञानिकों की सलाह पर उन्होंने जुलाई 2020 में 1 एकड में थाई एप्पल बेर के 440 तथा 20 रेडकश्मिरी एप्पल के पौधे लगाए। यह थाई एप्पल के पौधे शेखावाटी जैविक अनार फार्म, बेरी– सीकर से लाकर लाइन से लाइन की दूरी 12 फीट तथा पौधे से पौधे 10 फीट की दूरी पर लगाकर जैविक खादों, जीवामृत की बदौलत पहले ही वर्ष 50 पौधों से फलन लेकर 30000 रूपये कमानें में सफलता अर्जित कर खुशी महशूस कर रहे है।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती :– इसके अन्र्तगत किसान जीवामृत, नीम कीटनाशक, वेस्डिकम्पोजर, पंचगव्य, कम्पोस्टिंग, वर्मीकम्पोस्ट आदि जैविक पदार्थो का निर्माण कर खेती की लागत को कम कर अपनी उत्पादकता को बढाकर पूर्णतया जैविक खेती कर अत्यधिक मुनाफा कमा रहा हैं। सब्जियों में वर्ष 2020 से बूंद बूंद सिंचाई अपनाकर जायद में बैंगन तो सर्दी में हरा प्याज, गोभी, मूली, गाजर तथा हरा धनिया लगाए हैं। आंवला बगीचे में अंतराशस्यन के रूप में 0.5 हैक्टेयर में सब्जियों का उत्पादन करना शुरू किया। उद्यानिकी फसलों से परिवार के लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ।

किसान विविधतापूर्ण कृषि प्रणाली अपनाकर वर्ष 2019–2020 पशुपालन से 3.0 लाख + फसलोंत्पादन से 1.0 लाख + सब्जियों से 1.20 लाख के साथ **सभी स्त्रोतों से सालाना कुल शुद्ध 5.20 लाख आय लेने में सफल रहे।**

प्याज भंडारण कर कमाया मुनाफा

किसान का नाम : सीताराम डूडी
पता : गाँव-नयाबास, जोबनेर
मोबाइल नम्बर : 9983656019
आवंटित रेडी छात्रा का नाम : दीक्षिता राठौड़

यह कहानी कृषक श्री सीताराम डूडी निवासी नयाबास जोबनेर की है जिनके पास कुल 15 बीघा जमीन है। पिछले 2–3 वर्षो से यह प्याज की खेती कर रहे है परंतु सही तकनीक व उचित भंडारण गृह नहीं होने की वजह से प्याज सङ जाते थे जिससे उचित दाम नहीं मिल पाते थे। गत वर्ष इन्होंने अपने छोटे भाई श्री लालाराम डूडी के साथ मिलकर इस समस्या के उपाय के लिए और अच्छा मुनाफा कमाने हेतु कदम बढ़ाएं। संचार तकनीक का फायदा उठाते हुए इन्होंने किसान कॉल सेंटर फोन किया और वहां से आवश्यक सूचना इकट्ठा करी। चूंकि सिंचाई की अच्छी व्यवस्था इनके छोटे भाई श्री लालाराम डुडी के खेत में थी इसलिए तय किया गया कि प्याज की खेती व भंडारण छोटे भाई के खेत में किया जाएगा। जिसमें 5 बीघा पर प्याज की खेती की गई।

उत्तरी भारत में प्याज रबी की फसल है जहां प्याज का भंडारण अक्टूबर माह के बाद तक करना संभव नहीं है क्योंकि कंद अंकुरित हो जाते हैं इस अवधि (अक्टूबर से अप्रैल) में उत्तर भारत में प्याज की उपलब्धता कम होने तथा परिवहन खर्चे के कारण दाम बढ़ जाते हैं। इसलिए इन्होंने पास ही के व्यापारिक किसान से पीली पत्ती वाले देशी प्याज की किस्म खरीदी और तैयार किए हुए सीड बेड में बुवाई करी। किसान कॉल सेंटर से समय–समय पर परामर्श लेते हुए फसल में शस्य क्रियाएं करी।

जब फसल पक रही थी इस दौरान इन्होंने देशी भंडारण गृह बनाने हेतु केसीसी व यूट्यूब की मदद ली। भंडारण गृह बनाने हेतु 12 फीट चौड़ा व 20 फीट लंबा फूस से शेड तैयार किया। जमीन से 5–6 इंच ऊपर जाली बिछाकर शेड को तीन जगह से बंद कर दिया। 2 सीमेंट के पाइपों में छेद कर सीधे लेटा दिए व 2 सीधे खड़े कर दिए जिससे हवा इनमें से होकर हर जगह जा सके। इससे लाभ यह है कि जो भी कंद सङ जाता है वह हवा लगने के कारण सूख जाता है बाकी प्याज खराब नहीं होते।

वातावरण में नमी ज्यादा होने पर भंडारण गृह के द्वार को तिरपाल या ग्रीन शेड से ढक दिया जाता है। कम लागत में बना यह भंडार गृह प्याज को 3–4 महीने सुरक्षित रखेगा। प्याज के दामों में उछाल आने पर यह 10 से 15 रुपये प्रति किलोग्राम तक बेच दिए जाते हैं। किसान सीताराम डूडी ने बताया कि प्याज भंडारण गृह बनने से अब वे प्याज को भंडारण गृह में भंडारित कर रख सकेंगे जिससे प्याज खराब भी नहीं होगें तथा बाद में अच्छे दामों में बेच सकेंगे। इसके बन जाने से इन्हें आर्थिक फायदा भी हो रहा है तथा प्याज अच्छे भाव में बिक रहे हैं।

क्र. स.	फसल विवरण	किस्म	क्षेत्र	औसत बिक्री दर प्रति किलो	कुल व्यय (रुपय में)	कुल मुनाफा (रुपय में)
1.	प्याज	पीली पत्ती देशी किस्म	5 बीघा	10–15 रुपय/किलो	50000	150000–200000/वर्ष

आज श्री डूडी की यह देशी प्याज भण्डारण तकनीक को देखने व उनसे इसके बारे में जानकारी लेने के लिए उनके पास काफी किसान आते है। तथा इस तकनीक से सीख लेकर छोटेकिसान भी अपनाने को तैयार हो रहें है। श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय की अंतिम वर्ष की मेघावी छात्रा दीक्षिता राठौड़ ने रेडी कार्यक्रम के तहत इनके यहाँ रहकर जानकारी व प्रशिक्षण लिया।

मिश्रित खेती से किसान बना समृद्ध

किसान का नाम : श्री गोविंदराम कुमावत

पिता का नाम : श्री राधेश्याम कुमावत

पता : गांव-जोबनेर, जिला-जयपुर

मोबाइल : 8058558081

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : सोनू कुमावत

यह सफलता की कहानी प्रगतिशील कृषक श्री गोविंद राम कुमावत की है। इनके पास कुल 10 हेक्टेयर जमीन है! इन्होने कृषि विज्ञान से स्नातक पास की और वैज्ञानिक तरीके से खेती करना प्रारंभ किया। कृषि के साथ साथ इन्होंने पशुपालन में भैंस की देसी नस्ल के साथ मुर्रा नस्ल व गाय की जर्सी, हॉलिस्टिन का पालन किया। इन्होंने अधिकतम दूध उत्पादन से वर्ष 2016–17 में अधिकतम दिन तक सर्वाधिक मात्रा में दुग्ध डेयरी में देने पर पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड जयपुर राजस्थान से प्रशासित पत्र प्राप्त किया।

इन्होंने अपने क्षेत्र में जल की कमी होने के कारण वर्षा जल के संग्रहण के लिए खेत तलाई का निर्माण किया जिससे सब्जियों में वर्ष 2019 से प्लास्टिक मल्चिंग विधि में बूंद बूंद सिंचाई प्रणाली अपनाकर जायद में तरबूज, ककड़ी, मिर्च ,टमाटर तथा सर्दी में प्याज, फूल गोभी, पत्ता गोभी, पालक ,मूली तथा हरा धनिया को लगभग 1 हेक्टेयर में अंतरासस्य के रूप में सब्जियों का उत्पादन करना शुरू किया और इन्होंने सहायक कृषि अधिकारी की सलाह से एक हेक्टेयर में बूंद बूंद सिंचाई प्रणाली से बेर की खेती करना प्रारंभ किया। जिसमें गोला, उमरान, थाई एप्पल किस्में के 250 पौधे लगाए। इससें अच्छी आमदनी होने लगी।

वर्मी कंपोस्ट खाद जैव उर्वरकों के साथ– साथ कीट नियंत्रण के लिए जैविक रसायन का भी इस्तेमाल करने से फसल उत्पादन में भी बाजरा, ग्वार, जौ, गेहूं, सरसों से भी अच्छी आमदनी प्राप्त की।

मिश्रित खेती करने से प्राप्त आय–

मिश्रित खेती = पशुपालन + सब्जी + फसल उत्पादन से प्राप्त कुल वार्षिक आय= 48,300 + 1,52,000 + 1,20,000 = **7,55,000 रुपए**

इस प्रकार गोविंद राम जी ने मिश्रित खेती से 7.55 लाख की अच्छी आमदनी प्राप्त की !

समन्वित कृषि से हुए सफल डेहरा के महेन्द्र मण्डीवाल

किसान का नाम : श्री महेन्द्र मण्डीवाल

पिता का नाम : शंकर लाल

पता : गांव-डेहरा, जोबनेर, तहसील-फुलेरा, जिला-जयपुर

मोबाइल नंबर : 9887149463

आवंटित रेडी छात्र का नाम : पूजा मीणा

पशुधन से आय : इनके यहां 3 भैस व एक गाय है जो प्रतिदिन 8–10 लीटर दूध देती है। इससे इनको लगभग 6000रू/माह की आय प्राप्त होती है।

मुर्गीपालन से आय : इनके यहां लगभग 2000 चूजे है। इन्होने सन् 2008 में मुर्गीपालन शुरू किया था जिससे इनको प्रतिमाह 10,000 का लाभ हो जाता है। प्रतिवर्ष 1 लाख रुपये तक शुद्ध आय हो जाती है।

फसल उत्पादन : इनके यहां 15 बीघा भूमि है इसमें ये प्रतिवर्ष फसलोत्पादन करते है जैसे गेहु, बाजरा, जौ, मूंग, मूंगफली, चंवला आदि। इससे इनको घर संबंधी आवश्यकता पूरी होने के अलावा 4 लाख रूपये की आमदनी हो जाती है।

फार्मपौण्ड : इन्होने गतवर्ष एक फार्म पौण्ड का निर्माण करवाया है जिससे यह सब्जी उत्पादन का कार्य करते है।

समन्वित कृषि से प्राप्त शुद्व वार्षिक आय का विवरण :

इकाई	आय	प्रतिवर्ष आय रू.
1. पशुपालन	6000रू/माह	72000
2. फसलउत्पादन	2 लाख	4 लाख
3. मुर्गीपालन	10,000/माह	1 लाख

उद्यानिकी उत्पादन बना लाभकारी व्यवसाय

किसान का नाम : **श्री गोपाल लाल कुमावत**

पता : **गांव-डेहरा, जोबनेर, तहसील-फुलेरा, जिला-जयपुर**

मोबाइल नंबर : **9783764262**

आवंटित रेडी छात्रा का नाम : मेघा आसीवाल

यह सफलता की कहानी प्रगतिशील किसान श्री गोपाल लाल कुमावत निवासी डेहरा की है। जिन्होंने उद्यानिकी फसलों में उत्कृष्ट कार्य किया है। जिनके पास मात्र 0.75 है. भूमि है। श्रीगोपाल लाल कुमावत वर्ष 2012 से ही कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़े हुए हैं तथा श्री कर्ण नरेंद्र विश्वविद्यालय में आयोजित किसान मेला में सम्मिलत होते है, जिससे वह अपने खेत में नए नए प्रयोग करते रहते हैं। केंद्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों से प्रोत्साहित होकर उद्यानिकी फसलों का उत्पादन करते हैं। श्री कुमावत के पास इन फसलों की सिंचाई हेतु 20 लाख क्षमता का फॉर्मपोंडहै तथा उद्यानिकी फसलों की सिंचाई हेतु वह बूंद बूंद सिंचाई एवं फव्वारा विधी का उपयोग करते है।

फसल का नाम	लागत	कुल लाभ
सब्जी वाली फसल	20000	50000
फल वाली फसल	25000	75000

वह उद्यानिकी फसलों में सब्जी वाली फसल (टमाटर, मिर्च, लसौड़ा, गोभी, बैंगन) तथा फलवाली फसल (गन्ना, अंजीर, अनार, आम, बेर, चीकू, किन्नो, मौसमी, नींबू) का उत्पादन करते हैं।

फार्मपोंड से खेती उद्यानिकी एवं फसल उत्पादन : डेहरा क्षेत्र में पानी की कमी को देखते हुए 2 लाख लीटर क्षमता वाले फार्मपोंड का निर्माण करवाया। इसके निर्माण में करीब डेढ़ लाख का खर्च हुआ। इसकी अधिक संचय क्षमता के कारण इससे फसलों का उत्पादन बढ़ा है, साथ ही खेती की आय का आंकड़ा बढ़ चुका है।

अच्छी गुणवत्ता को बनाये रखना : उद्यानिकी फसलों की गुणवता को बनाए रखने के लिए वह अपने रसायन का इस्तेमाल कम मात्रा में करते हैं तथा कार्बनिक पदार्थ का इस्तेमाल करते हैं। जैसे वह गोबर की खाद, वर्मी कंपोस्ट खाद, इत्यादि कार्बनिक पदार्थ का उपयोग करते हैं । जिससे उद्यानिकी फसलों की गुणवता बढ़ी है तथा मृदा की उत्पादन क्षमता बढ़ी है।

उपलब्धि : कम पानी वाले क्षेत्र में उत्कृष्ट गुणवता वाली फसलों का उत्पादन।

युवा किसान ने मशरूम की खेती से पाई सफलता

किसान का नाम : **श्री विकास नागा पुत्र श्री मोहन लाल नागा**
पता : **खोरानियों की ढ़ाणी, बोराज- 303328**
तहसील : **दुदु, जिला -जयपुर**
मोबाइल नम्बर : **9785242408**
आवंटित रेडी छात्रा का नाम : वैशाली जैन

बोराज गाँव के श्री विकास नागा अपने गाँव के साथ–साथ पूरे जिले में एक नई पहचान बना चुके हैं, उन्होने अपने कठिन परिश्रम और कुछ नय करने के जुनुन के साथ अपने परिवार की आर्थिक स्थिति तो बदल ही दी है, साथ ही अन्य किसान भाइयों और बहनों को अपनी आजिविका बदलने का मार्गदर्शन दे रहे है। उन्होने 5 वर्ष पहले मशरूम की खेती शुरू करके और उसमें सफलता पाकर अन्य किसानों के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत बनें। पांरपरिक खेती एवं पशुपालन के साथ–साथ वह आज मशरूम उत्पादन में ऊँचाइयों को छू रहे है। इनके द्वारा उत्पादित मशरूम जिले के आस–पास की मण्डियों, प्रतिष्ठानों, होटलो, सुपर–मार्केट इत्यादि जगहों पर बेचे जाते है।

उनके परिवार के सभी सदस्य शुरूआत से पांरपरिक खेती करते आये है, जिससे कभी ज्यादा मुनाफा नही मिला। कृषि विज्ञान केन्द्र से उनको मशरूम की खेती करने की सलाह मिली, और उन्हे भी लगा कि यह उनके लिए ठीक रहेगा, क्योंकि उनके पास ज्यादा जमीन भी नहीं थी। बाद सोलन मे मशरूम का प्रशिक्षण लिया जिसमें उन्होनें मशरूम उत्पादन, इसके उपयोग इसके एवं लाभ आदि के बारे में जाना। इसके पश्चात् उन्होने अन्य स्थानों पर जाकर प्रशिक्षण लिए और सर्वोत्तम बीज उत्पादन के बारे में भी सीखा। फिर इन्होनें छोटे स्तर पर अपना का शुरू कियाऔर दिनों–दिन सफलता हासिल की। उन्होने आस–पास के गाँवो के किसानो को भी मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण देने का कार्य भी शुरू किया। और वह सभी आज सफलता से मशरूम उत्पादन कर रहे हैं।

विकास नागा अन्य किसानो ंको भी उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बदलने का मार्गदर्शन कर रहे है उनका कहना है कि मशरूम की खेती से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी प्रोत्साहन मिल रहा है, और खेती में लगे लोग आत्म निर्भर वन रहे है। वह यह भी बताते हैं कि इसमें लागत का 2–3 गुणा ज्यादा फायदा होता है, और ज्यादा जमीन की भी आवश्यकता नही होती। सबसे पहले इनके पास सिर्फ दो बीघा जमीन थी जिस पर पांरपरिक खेती का कार्य करते थे, आज से 5 वर्ष पहले उन्होनें पहले इस जमीन को मशरूम की खेती हेतु उपजाऊ बनाया, फिर पहले वर्ष मे इन्होने सिर्फ 2 मशरूम उत्पादन झोपड़े तैयार किए, उन्होने दुसरे वर्ष में 4 झोपड़े तैयार किए, जिससे 3 से 4 लाख प्रतिवर्ष की आय प्राप्त की। इसी प्रकार आगे बढ़त ेहुए उन्होने गतवर्ष पशुपालन, पांरपरिक खेती के साथ–साथ मशरूम उत्पादन से 8–9 लाख प्रतिवर्ष की आय प्राप्तकी।आज के समय विकास एक मशरूम उत्पादन ईकाई बोराज मे चलातेहै, जहाँ वह प्रशिक्षण देने का कार्य भी करत ेहै जिससे और मुनाफा मिलता है। और दुसरी ईकाई जयपुर में ए सी. रूम के तौर पर तैयार है, जहाँ मशरूम उत्पादन का कार्य करते है।

विकास नागा के काम को अच्छी पहचान मिलने लगीहैं। मशरूम की खेती में उनका जिले में अहम् योगदानहै। अब वह मशरूम उत्पादन के साथ–साथ इसका प्रशिक्षण देने से भी मुनाफा कमा रहे है।

इनकी मशरूम ईकाई पर श्रीकर्णनरेन्द्र कृषिविश्वविद्यालय की वैशाली, सरिता, सुमन, रिया, पुजा सहित रेडी छात्रओं ने एग्रो. इण्डसट्रीज अटेचमेन्ट कार्यक्रम के तहत मशरूम उत्पादन एवं मार्केटिगं का प्रशिक्षण लियां।

सम्पर्क

डॉ. बलवीर सिंह बधाला, सहायक प्रोफेसर व रेडी प्रभारी

Mob. 9461707172, 9001142412

E-mail : bsbadhala.ext@sknau.ac.in

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष

Mob. 9414728800, 7976584932

E-mail : kcsharma.ext@sknau.ac.in

बी. एल. आसीवाल, सहायक प्रोफेसर

Mob. 9887728044

E-mail : asiwalbl@gmail.com

प्रसार शिक्षा विभाग

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय

(श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय)

जोबनेर–जयपुर (राज.)–303329